Shri Baglamukhi Khadag Mala Mantra



Shri Yogeshwaranand Ji

+919917325788, +919540674788
shaktisadhna@yahoo.com
www.yogeshwaranand.org
www.anusthanokarehasya.com



यंहा प्रस्तुत खड्गमाला मंत्र गुरूदेव श्री योगेश्वरानन्द जी द्वारा लिखित पुस्तक श्री बगलामुखी साधना रहस्य (ब्रह्मास्त्र साधना) से लिया गया है । इस पुस्तक का प्रथम संस्करण 1000 प्रतियो के साथ जल्द ही आ रहा है।

॥ श्री पीताम्बरा-बगलामुखी-खड्गमाला-मंत्र ॥

''श्री विष्णुयामल-तंत्र'' उद्धृत प्रस्तुत खड्गमाला भी साधकों के मध्य अत्यंत प्रसिद्ध एवं सम्मानित है। इस माला-मंत्र का अत्यधिक महत्व इसलिए भी है, क्योंकि इसे अज्ञात शत्रु के संदर्भ में भी प्रयोग किया जा सकता है। ऐसी स्थिति में जब कोई अज्ञात शत्रु साधक के जीवन को संकटापन्न करने हेतु निरन्तर प्रयत्न शील हो, अभिचारिक कर्म कर रहा हो और कोई उपाय सफल न हो पा रहा हो, ऐसी स्थिति में यह प्रयोग बहुत अधिक लाभदायक है। यदि शत्रु सामने ही हो, तब तो कोई समस्या ही नहीं है। प्रभावित साधक निःसंदेह इस खड्गमाला का प्रयोग कर सकता है।

खड्गमाला-मंत्र का प्रयोग आरंभ करने से पूर्व भगवती बगला का सांगोपांग पूजन-अर्चन करने के उपरांत 36 अथवा 40 दिन का अनुष्ठान करें। नित्यप्रति 11, 21, 51, 101 अथवा 108 पाठ करें। इस प्रकार किया गया अनुष्ठान साधक के संकटों का उन्मूलन करके उसे सुरक्षा प्रदान करता है।

सर्वप्रथम विनियोग करें-

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

विनियोग- ॐ अस्य श्रीपीताम्बरा-बगलामुखी-खड्गमालामंत्रस्य नारायण ऋषिः, त्रिष्टुप छन्दः, बगलामुखी देवता, ह्लीं बीजं, स्वाहा, शक्तिः, ॐ कीलकं, ममाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास- नारायण ऋषये नमः शिरसि। त्रिष्टुप्छन्दसे नमो मुखे श्रीबगलामुखीदेवतायै नमः हृदये, ह्लीं बीजाय नमो गुह्ये; स्वाहा शक्ते नमः पादयो, ॐ कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यास- ॐ ह्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, बगलामुखि तर्जनीभ्यां नमः सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां नमः, वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां नमः, जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां नमः, बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास- ॐ ह्लीं हृदयाम नमः। बगलामुखी शिरसे स्वाहा। सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्। वाचं मुखं पदं स्तम्भयं

कवचाय हुं। जिह्वां कीलय नेत्र त्रयाय वौषट् बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।
इसके बाद ध्यान करें-

॥ ध्यानम् ॥

मध्येसुधाब्धि मणिमण्डप-रत्न-वेद्यां
सिंहासनोपरिगतां परिपीतवस्त्राम्।
भ्राम्यद्रदां कररिनपीडितवैरिजिह्वां
पीताम्बरां कनकमाल्यवतीं नमामि।

मानसौपचारैः सम्पूज्य जपं कुर्यात्।

पाठ- ॐ ह्लीं सर्वनिन्दकानां सर्वदुष्टानां वाचं स्तम्भय स्तम्भय बुद्धिं विनाशय विनाशय अपरबुद्धिं कुरू कुरू अपस्मारं कुरू कुरू आत्मविरोधिनां शिरो-ललाट-मुख-नेत्र-कर्ण-नासिका-दन्तोष्ठजिह्वा-तालुकण्ठ-बाहूदर-कुक्षि-नाभि-पार्श्वद्वय-गुह्य-गुदाण्ड-त्रिकजानुपादसर्वाङ्गेषु पादादिकेश-पर्यन्तं केशादिपादपर्यन्तं स्तम्भय स्तम्भय मारय मारय परमंत्र-परयन्त्र परतंत्राणि छेदय छेदय आत्ममंत्र-यंत्रतंाणि रक्ष रक्ष सर्वग्रहान् निवारह निवारह सर्वं अविधिं विनाशय विनाशय दुःखं हन हन दारिद्रयं निवारय निवारय सर्वमंत्रस्वरूपिणि सर्वशल्ययोगस्वरूपिणि दुष्टग्रह-चण्डग्रह-भूतग्रहाऽऽकाशग्रह-चौरग्रह-षाषाणग्रह-चाण्डालग्रह-यक्षगंधर्वकिन्नग्रह ब्रह्मराक्षसग्रह-भूत-प्रेत-पिशाचादीनां शाकिनी डाकिनी-ग्रहाणां पूर्वदिशं बन्धय-बन्धय वाराहि बगलामुखि मां रक्ष रक्ष दक्षिणदिशं बन्धय बन्धय किरातवाराहि मां रक्ष रक्ष पश्चिमदिशं बन्धय बन्धय स्वप्नवाराहि मां रक्ष रक्ष उत्तरदिशं बन्धय बन्धय धूम्रवाराहि मां रक्ष रक्ष सर्वदिशो बन्धय बन्धय कुक्कुट वाराहि मां रक्ष रक्ष अधरदिशं बन्धय-बन्धय परमेश्वरि मां रक्ष रक्ष सर्वरोगान् विनाशय विनाशय सर्वशत्रुपलायनाय सर्वशत्रुकुलं मूलतो नाशय-नाशय शत्रूणां राज्यवश्यं स्त्रीवश्यं जनवश्यं दह दह पच पच सकललोकस्तम्भिनि शत्रून् स्तम्भय स्तम्भय स्तम्भनमोहनाऽऽकर्षणाय सर्वरिपूणाम् उच्चाटनं कुरू कुरू ॐ ह्लीं क्लीं ऐं वाक्यप्रदानाय ग्लौं सकलभूमण्डलाधिपत्यप्रदानाय दां चिरंजीवने। ह्लां ह्लीं ह्लूं क्लां क्लीं क्लूं सौः ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय राजस्तम्भिनि क्रों क्रों छ्रीं छ्रीं सर्वजनसंमोहिनी सभास्तम्भिनि स्त्रां स्त्रीं सर्वमुखरञ्जिनि मुखं बन्धय बन्धय ज्वल ज्वल हंस हसं राजहंस प्रतिलोम इहलोक परलोक परद्वार राजद्वार क्लीं क्लूं घ्रीं रूं क्रों क्लीं खाणि खाणि। जिह्वां बन्धयामि सकलजनसर्वेन्द्रियाणि बन्धयामि नागाश्च-मृग-सर्प विहङ्गमवृश्चिकादि-महोग्रभूतजातं बन्धयामि बन्धयामि लक्ष्मीं प्रददामि प्रददामि त्वम् इह आगच्छ आगच्छ अत्रैव निवासं कुरू कुरू ॐ ह्लीं बगले परमेश्वरि हुं फट् स्वाहा।

मूलमंत्रवता कुर्याद् विद्यां न दर्शयेत् क्वचित्।
वितत्तौ स्वप्रकाले च विद्या स्तम्भिनीं दर्शयेत्।
गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः।
प्रकाशनात् सिद्धिहानिः स्याद् वर्श्य मरणं भवेत्।

दद्यात् शान्ताय सत्याय कौलाचारपराय च।
दुर्गाभक्ताय शैवाय मृत्युञ्जयरताय च।
तस्मै दद्याद् इमं खड्गं से शिवो नात्र संशयः।
अशाक्ताय च नो दद्याद दीक्षाहीनाय वै तथा।
न दर्शयेद् इमं खड्गम् इत्याज्ञा शङ्करस्य च।

(इति श्री विष्णुयामले बगला-खड्गमाला-मंत्रः समाप्तम्)

Please secure your copy of Shri Baglamukhi Sadhana Rahasya (Brahmastra Sadhana), the upcoming book of Shri Yogeshwaranand Ji by paying Rs 680 (Including postal charges) into the below account.

Sumit Girdharwal

Axis Bank

912020029471298 (Current Account)

Ifsc Code UTIB0001094

After payment send an email with you complete address including the payment receipt.



Shri Yogeshwaranand Ji

+919917325788, +919675778193

shaktisadhna@yahoo.com

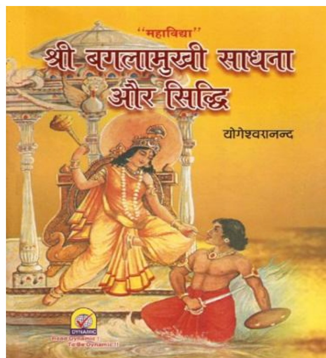
www.anusthanokarehasya.com

www.baglamukhi.info

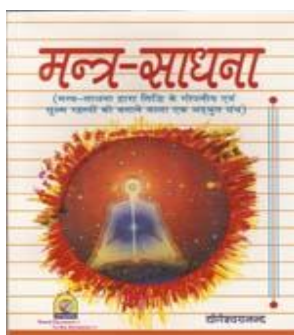
My dear readers! Very soon I am going to start an E-mail based monthly magazine related to tantras, mantras and yantras including practical uses for human welfare. I request you to appreciate me, so that I can change my dreams into reality regarding the service of humanity through blessings of our saints and through the grace of Ma Pitambara. Please make registered to yourself and your friends. For registration email me at shaktisadhna@yahoo.com. Thanks

For Purchasing all the books written By Shri Yogeshwaranand Ji Please Contact 9410030994

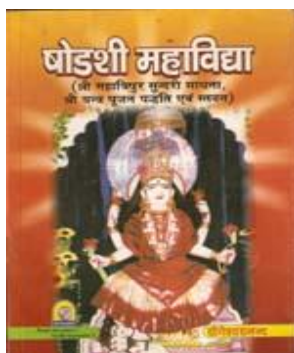
1. Mahavidya Shri Baglamukhi Sadhana Aur Siddhi



2. **Mantra Sadhana**



3. **Shodashi Mahavidya** (Tripursundari Sadhana)



4. Shri Baglamukhi Sadhana Rahasya (Brahmastra Sadhana) - Under Process